Gn – बूथों के पर्व पर संघर्ष | 1

– Save This Page as a PDF–

बूथों के पर्व पर संघर्ष

इज़राइल में सभी त्योहारों के मौसम में सबसे अधिक
खुशी बूथ या सुक्कोथ की दावतथी। यह वर्ष के ऐसे समय पर पड़ता था जब लोगों के दिल स्वाभाविक रूप से कृतज्ञता, खुशी और प्रत्याशा से भरे होते थे। सभी फसलें लंबे समय से संग्रहीत की गई थीं; और अब सभी फल इकट्ठे हो चुके थे, पुराना अतीत, और भूमि को नई फसल के लिए तैयार करने के लिए केवल “अंतिम बारिश” की नरमी और ताजगी का इंतजार था। यह उचित था कि जब फसल की शुरुआत में जौ का पहला पका हुआ पूला चढ़ाकर आशीर्वाद दिया गया था, और दो लहर-रोटियों द्वारा मकई की पूरी कटाई की गई थी, तब एडोनाई के लिए कृतज्ञता और खुशी का एक फसल उत्सव होना चाहिए।

अर्नोल्ड फ्रुचटेनबाम इज़राइल के सात पर्वों के भविष्यसूचक दृष्टिकोण पर चर्चा करते हैं। उनका मानना है कि मसीहा के प्रथम आगमन के कार्यक्रम ने पहले चार पर्वों को पूरा किया। पहले चार पर्व एक दूसरे के पचास दिनों के भीतर आते हैं। फसह का पर्वमेशियाक की मृत्यु से पूरा हुआ; अखमीरी रोटी का पर्व उसके बलिदान की पापरहितता से पूरा हुआ; प्रथम फल का पर्वयीशुके पुनरुत्थान से पूरा हुआ; शवूओट का पर्व चर्च के जन्म से पूरा हुआ। यह दावतों का पहला चक्र समाप्त करता है, जो प्रथम आगमन के कार्यक्रम में पूरा किया गया था।

लैव्यव्यवस्था २३:२२ में पहले चार और आखिरी तीन पर्वों के बीच चार महीने का अंतराल बताया गया है। यह दावतों के दो सेटों के बीच एक विराम था, जिसके दौरान जीवन को सामान्य तरीके से जारी रखना था। इसे गर्मियों की अंतिम फसल की तैयारी और पतझड़ की फसल आने से पहले खेतों में गर्मियों के श्रम के रूप में चित्रित किया गया है।

जब तुम अपनी भूमि की उपज काटो, तो अपने खेत के सिरे तक न काटो, और न अपनी उपज की बालें बटोरो। उन्हें गरीबों और अपने बीच रहने वाले विदेशियों के लिए छोड़ दो। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं (लैव्यव्यवस्था २३:२२)।

Gn – बूथों के पर्व पर संघर्ष | 2

यह एक पद्य वाला कथन है जिसका किसी भोज से कोई संबंध नहीं है। यह लगभग एक अनावश्यक रुकावट की तरह लगता है जब तक कि यह समझ में नहीं आता कि वास्तव में क्या हो रहा है। यह उन दावतों के बीच का विराम है जो पहले आगमन के कार्यक्रम द्वारा पूरी की जाती हैं, न कि दूसरे आगमन के कार्यक्रम द्वारा पूरी की जाने वाली दावतों के बीच। यह चार महीने का अंतराल अनुग्रह के वितरण (इब्रानियों पर मेरी टिप्पणी देखें Bp– अनुग्रह का वितरण) के सम्मिलन को चित्रित करता है, जो इज़राइल के सात पर्वों के कार्यक्रम को बाधित करता है। वास्तव में, गरीबों और विदेशियों के लिए दान चर्च के मिशन का एक बहुत अच्छा उदाहरण है। युहन्ना ने येशुआ के बारे में अपने शिष्यों से यह कहते हुए लिखा: क्या आपके पास यह कहावत नहीं है, “फसल कटने में अभी भी चार महीने बाकी हैं?” मैं तुमसे कहता हूं, अपनी आंखें खोलो और खेतों को देखो! वे फसल के लिए पक चुके हैं (यूहन्ना ४:३५)। हां, यह चार महीने का अंतराल दुनिया में प्रचार करने के लिए यहूदी और अन्यजातियों के विश्वासियों से बने चर्च के दायित्व का एक उपयुक्त प्रतीक बन जाता है (मती २८:१८-२०)। तो लैव्यव्यवस्था २३:२२ एक मूल पद है, जो वर्तमान युग का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें हम अब रहते हैं, जिसमें इज़राइल के पर्वों का कार्यक्रम अस्थायी रूप से बाधित हो गया है।

पर्वों के दूसरे चक्र में अंतिम तीन पर्वभी एक साथ आते हैं, पर्वों के पहले चक्र की तुलना में और भी करीब। वास्तव में, वे सभी एक दूसरे के दो सप्ताह के भीतर आते हैं। दूसरे चक्र के इन अंतिम तीन पर्वों को येशु हा-मशीच के दूसरे आगमन के कार्यक्रम द्वारा पूरा किया जाना है।

तुरही का पर्व चर्च के उत्थान द्वारा पूरा किया जाएगा; महान क्लेश प्रायश्चित के दिन को पूरा करेगा; मसीहाई राज्य सुक्कोट के पर्व को पूरा करेगा। जिस तरह बूथों का पर्व प्रायश्चित के दिन के कष्ट के बाद आनन्द मनाने का समय है, उसी तरह, मसीहाई राज्य भी महान क्लेश के कष्टों के बाद आनन्द मनाने का समय है।

हम सभी ने अपने यहूदी मित्रों या परिवार से ये प्रश्न सुने हैं: यदि येशु वास्तविक मसीहा हैं, तो उन्होंने शास्त्रों के सभी वादों को पूरा क्यों नहीं किया? यदि मसीहा पहले ही आ चुके हैं, तो अभी भी युद्ध और समस्याएँ क्यों हैं? यदि आप रुककर इस पर विचार करें तो यह वास्तव में अच्छे प्रश्न हैं! फिर भी हममें से कई लोगों को पर्याप्त उत्तर मिल गए हैं क्योंकि हमने पवित्र शास्त्रों का अधिक ध्यानपूर्वक अध्ययन करना शुरू किया है। हालाँकि बहुत से यहूदी मानते हैं कि येशु मसीहा के वर्णन में फिट नहीं हो सकते, यहाँ तक कि शास्त्रीय रब्बी भी देख सकते थे कि मसीहा के बड़े प्रश्न का उत्तर इतनी आसानी से नहीं दिया जा सकता था। तथ्य यह है कि मसीहा के इस्राएल में आने पर क्या होगा, इसकी दो विपरीत तस्वीरें दिखाई देती हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि मसीहा यरूशलेम में मुख्यालय के साथ शांति और आशीर्वाद का एक शाश्वत राज्य स्थापित करेगा (यशायाह ११; मीका ४)। फिर भी, इसके विपरीत प्रतीत होने वाले कई अन्य पवित्र शास्त्र एक पीड़ित मसीहा की बात करते हैं जिसे कई लोगों द्वारा अस्वीकार कर दिया जाता है (यशायाह ५३; दानिय्येल ९)।

कई शुरुआती रब्बी इन कथनों से हैरान थे और आश्चर्य करते थे कि इन दो पहलुओं को एक व्यक्ति

Gn – बूथों के पर्व पर संघर्ष | 3

में कैसे समेटा जा सकता है (देखें Mv– दो मसीहाओं की यहूदी अवधारणा)। कई बार एक प्रस्तावित समाधान प्रस्तुत किया जाता है कि वास्तव में दो अलग-अलग मसीहा होने चाहिए जो दो अलग-अलग कार्य विवरणों को पूरा करेंगे। उन्होंने राजा मसीहा को “मशीच बेन डेविड” कहा क्योंकि वह डेविड का बड़ा बेटा होगा। पीड़ित व्यक्ति को “मशीच बेन योसेफ” के रूप में नामित किया गया था क्योंकि वह उत्पत्ति की पुस्तक (बेबीलोनियन तल्मूड सुक्का ५२ ए) में जोसेफ (याकूब का बेटा) के समान ही पीड़ित दिखाई देता है।

जैसे-जैसे हम उच्च पवित्र दिनों के करीब आते हैं, मेरा मानना है कि मसीहा के दोहरे मंत्रालय के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण सबूत हैं जिन्हें अक्सर अनदेखा किया जाता है। सुकोट (बूथों का पर्व), पतझड़ की फसल का उत्सव होने के अलावा, मसीहा के राज्य की एक भविष्यवाणीपूर्ण तस्वीर भी समझा जाता है। हम अपने सुकोट/अस्थायी झोपड़ियों का निर्माण हमें इस महान सत्य की याद दिलाने के लिए करते हैं कि वह दिन आ रहा है जब मसीहा हमारे बीच “निवास करेगा या निवास करेगा” और डेविड के बेटे के रूप में वादों को पूरा करेगा। यही कारण है कि भविष्यवक्ता यहूदी और गैर-यहूदी दोनों ही तरह के सभी छुड़ाए गए लोगों के बीच इस पर्व के राज्य उत्सव की भविष्यवाणी करते हैं: तब ऐसा होगा कि यरूशलेम के विरुद्ध जाने वाले सभी राष्ट्रों में से जो बचे रहेंगे, वे हर साल राजा, सेनाओं के प्रभु की आराधना करने और झोपड़ियों का पर्व मनाने के लिए आएंगे (जकर्याह १४:१६)। यह समझ में आता है कि सुकोट राज्य में सबसे प्रमुख पर्व होगा क्योंकि मसीहा अब अपने लोगों के साथ रह रहे हैं!

फिर भी इस पतझड़ के पर्व के भीतर मसीहा के काम का दूसरा पहलू भी छिपा हुआ है; अर्थात् हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए उनका दुख। इसका मतलब है कि सुकोटऔर मसीहा के पहले आगमन के बीच किसी तरह का संबंध होना चाहिए जैसा कि मसीहाई यहूदी इसे देखते हैं। मुझे यह दिलचस्प लगता है कि इस बात पर हमेशा से कुछ बहस होती रही है कि यीशु वास्तव में दुनिया में कब पैदा हुए थे। अधिकांश पश्चिमी ईसाई मसीहा के पहले आगमन को याद करने के लिए 25 दिसंबर को क्रिसमस मनाते हैं। शायद बहुत से लोग, यहूदी और गैर-यहूदी दोनों, सुकोटके महत्वपूर्ण पवित्र दिन को अनदेखा कर चुके हैं, क्योंकि यह मसीहा के पहले आगमन का जश्न मनाने का ईश्वर का समय है? जैसा कि यहूदी विश्वासियों ने पहली सदी में लिखा था: शुरुआत में वचन था, और वचन ईश्वर के साथ था, और वचन ईश्वर था… और वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच वास किया (शाब्दिक रूप से, तम्बू में) (यूहन्ना १:१और १४)।

सुकोट का आखिरी दिन एक अतिरिक्त त्यौहार का दिन है जिसे टोरा आठवां दिन कहता है (Gp पर टिप्पणी देखें – पर्व के आखिरी और सबसे बड़े दिन पर)। यदि येशुआ का जन्म बूथों के पर्व के पहले दिन हुआ था, तो उन्होंने उसका खतना “आठवें दिन” नामक दिन पर किया होगा, जिससे शाब्दिक रूप से शास्त्र की यह बात पूरी होती है: आठवें दिन उसकी चमड़ी का मांस खतना किया जाएगा (लेव१२:३)।

कितना सही! जब लेखक येशु के प्रथम आगमन के बारे में सोचता है, तो वह हमारे प्राचीन सुकोट पर्व से इसका संबंध जोड़ता है। वास्तव में, मसीहा अपने पहले आगमन पर बेन योसेफ के रूप में अपने लोगों के साथ इस्राएल में रहा। अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से, नासरत का

[illegible]